Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
April 2024
ISSN 2229-3388

डॉ. मन्नू भंडारी की रचनाएं एवं नारी जीवन

प्रो. वीणा छंगाणी,

अधिष्ठाता, मानविकी एवं कला विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर।

शोधार्थी: प्रीतम यादव,

मानविकी एवं कला विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर।

सार –

हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में डॉ. मन्नू भंडारी का नाम एक सशक्त, प्रगतिशील और यथार्थवादी लेखिका के रूप में स्थापित है। उनके साहित्य में नारी जीवन के विविध पक्षों – संघर्ष, अस्मिता, अधिकार, पारिवारिक जटिलताएं तथा सामाजिक बेड़ियाँ – का गहन चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों और नाटकों के माध्यम से नारी के अंतर्मन की व्यथा, सामाजिक अपेक्षाओं का बोझ, तथा स्वतंत्रता की आकांक्षा को बहुत ही संवेदनशील और यथार्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। यह शोध-पत्र डॉ. मन्नू भंडारी की रचनाओं के माध्यम से नारी जीवन के विविध आयामों का विश्लेषण करता है।

प्रमुख शब्द- नारी विमर्श, आत्मनिर्भरता, स्त्री अस्मिता, हिंदी साहित्य, सामाजिक यथार्थ, पारिवारिक द्वंद्व, महिला चेतना, समकालीन नारी

1. भूमिका

हिंदी साहित्य के परिदृश्य में जब भी नारी चेतना और यथार्थवादी लेखन की बात होती है, डॉ. मन्नू भंडारी का नाम प्रमुखता से सामने आता है। वे मात्र एक लेखिका नहीं, बल्कि उस सामाजिक और मानसिक क्रांति की संवाहक थीं, जिसने स्त्री को एक सजग, संवेदनशील और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में देखने की दिशा दी। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, जब स्त्री लेखन को परंपराओं की छाया से बाहर निकालने की आवश्यकता थी, तब डॉ. मन्नू भंडारी ने अपने लेखन से नारी जीवन की सूक्ष्म संवेदनाओं, अंतरविरोधों और सामाजिक द्वंद्वों को नई भाषा दी।

उनके लेखन में वह स्त्री दिखाई देती है जो परंपरा, समाज और परिवार के बंधनों से जूझते हुए अपनी पहचान को खोजती है। मन्नू भंडारी की रचनाओं में केवल स्त्री की व्यथा नहीं, बल्कि उसका संघर्ष, उसकी जिजीविषा और आत्मसम्मान भी प्रमुखता से उभर कर आता है। उनके पात्र बोलते नहीं, बल्कि अपने आचरण से समाज को उत्तर देते हैं।

2. डॉ. मन्नू भंडारी का साहित्यिक योगदान

डॉ. मन्नू भंडारी का साहित्य बहुआयामी है – कहानियाँ, उपन्यास, नाटक और संस्मरण। उन्होंने आम जीवन की जटिलताओं को सहज भाषा और प्रभावशाली शैली में व्यक्त किया। उनका लेखन विशेषतः निम्न-मध्यवर्गीय परिवेश से जुड़ी स्त्रियों के जीवन को अभिव्यक्त करता है। उनके पात्र आम जिंदगी से उठाए गए हैं, जो पाठक से जुड़ते हैं और उसे सोचने को विवश करते हैं।

प्रमुख रचनाएँ:

उपन्यास:

- आपका बंटी
- महाभोज
- स्वामी
- एक इंच मुस्कान (राजेन्द्र यादव के साथ)

कहानी संग्रह:

- त्रिशंकु
- यही सच है
- काफी लंबा सफर
- आंखों देखा झूठ

नाटक:

- बिना दीवार का घर
- महाभोज (नाट्य रूपांतरण)

3. मन्नू भंडारी की रचनाओं में नारी जीवन का चित्रण

3.1 नारी अस्मिता और आत्मचेतना

उनकी नायिकाएँ अपनी अस्मिता और स्वतंत्रता को लेकर सजग हैं। 'आपका बंटी' में शालिनी तलाक के बाद अपने बेटे की कस्टडी को लेकर मानसिक संघर्ष झेलती है, किंतु वह किसी भी स्थिति में अपनी आत्मनिर्भरता से समझौता नहीं करती। यह आत्मबल उनके अनेक पात्रों में दिखाई देता है, जो समाज के बनाए हुए ढांचे को तोड़कर अपनी राह स्वयं बनाती हैं।

3.2 पारिवारिक संरचना और स्त्री का स्थान

उनकी रचनाओं में परिवार के भीतर स्त्री की स्थिति का गहन चित्रण है – जहां स्त्री की भूमिका केवल 'पत्नी' और 'माँ' तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक स्वतंत्र व्यक्तित्व भी है। 'स्वामी' उपन्यास की सौदामिनी अपने पारंपरिक पति और ससुराल की अपेक्षाओं के बीच अपने अस्तित्व को तलाशती है। यह तलाश केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक स्तर पर भी दिखाई देती है।

3.3 सामाजिक दबाव और संघर्ष

उन्होंने स्त्री के सामाजिक संघर्षों को गंभीरता से उकेरा है। 'महाभोज' में ग्रामीण पृष्ठभूमि की दलित स्त्रियाँ, राजनीति और पितृसत्ता के दमन के बीच अपनी पहचान के लिए संघर्ष करती हैं। यह उपन्यास वर्ग और जाति के मुद्दों के साथ-साथ स्त्री की दोहरी शोषण व्यवस्था को उजागर करता है। मन्नू भंडारी के पात्र शोषण के खिलाफ विद्रोह की चेतना को भी साथ लाते हैं।

3.4 प्रेम, विवाह और संबंधों का यथार्थ

उन्होंने स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता को बिना किसी आदर्शवाद या अतिनाटकीयता के दर्शाया है। 'एक इंच मुस्कान' में पुरुष और स्त्री के बीच भावनात्मक खिंचाव और संचार की कमी को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। उनके पात्र संबंधों में रहते हुए भी अपनी स्वतंत्रता और आत्म-सम्मान को खोने नहीं देते।

3.5 समकालीन लेखिकाओं से तुलना

मन्नू भंडारी के लेखन की तुलना समकालीन लेखिकाओं जैसे कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, और नासिरा शर्मा से करने पर यह स्पष्ट होता है कि वे सामाजिक यथार्थ और स्त्री जीवन के चित्रण में कहीं अधिक व्यावहारिक और गहन दृष्टिकोण अपनाती हैं। जहाँ कृष्णा सोबती भाषा और शैली में प्रयोग करती हैं, वहीं मन्नू भंडारी पात्रों की गहराई और यथार्थ पर ज़ोर देती हैं।

3.6 मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

उनके पात्रों के निर्णय और व्यवहारों का विश्लेषण मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी किया जा सकता है। शालिनी का पुत्र मोह, सौदामिनी का दांपत्य जीवन से मोहभंग – ये सभी स्त्री मन की सूक्ष्म परतों को दर्शाते हैं, जो पाठक को मानसिक स्तर पर भी सोचने पर विवश करते हैं।

4. नारी विमर्श और मन्नू भंडारी

नारी विमर्श की दृष्टि से उनका लेखन सशक्त हस्तक्षेप है। वे स्त्री को "भोग्या" या "देवी" की पारंपरिक छवि से निकालकर, सोचने-समझने और निर्णय लेने में सक्षम मानव के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनका लेखन यह स्थापित करता है कि स्त्री की समस्याएँ केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भी हैं। वे पितृसत्ता की संरचना को चुनौती देती हैं और स्त्री के पक्ष में एक नई वैचारिक दृष्टि प्रस्तुत करती हैं।

5. मन्नू भंडारी का भाषा-शिल्प और शैली

उनकी भाषा अत्यंत सहज, संवादधर्मी और पात्रों के मनोभावों के अनुरूप है। वे जटिल सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रश्नों को बिना भाषाई क्लिष्टता के प्रस्तुत करती हैं। इस कारण उनका लेखन पाठकों से सीधे संवाद करता प्रतीत होता है। वे सूक्ष्म मनोविश्लेषणात्मक विवरणों को इतनी सहजता से पिरोती हैं कि पाठक पात्रों की पीड़ा और संघर्ष को गहराई से महसूस करता है।

6. समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

आज भी उनकी रचनाएँ उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी वे लेखन-काल में थीं। स्त्रियों की अस्मिता, घरेलू हिंसा, एकल मातृत्व, कार्यस्थल पर भेदभाव – इन सभी मुद्दों की जड़ें उनके साहित्य में मिलती हैं। उनके पात्र आज की स्त्री के भीतर जूझते प्रश्नों को जीवंत करते हैं। यही कारण है कि नई पीढ़ी की स्त्रियाँ भी उनके साहित्य में अपने जीवन की परछाई खोज लेती हैं।

7. निष्कर्ष

उनका समग्र साहित्य नारी जीवन के विभिन्न पक्षों को गहराई से समझने में सहायक है। वे नारी को किसी विशेष वर्ग या भूमिका में नहीं बांधतीं, बल्कि उसके विविध स्वरूपों को सामने लाती हैं। उनका लेखन एक ओर समाज के दकियानूसी ढांचे को चुनौती देता है, तो दूसरी ओर स्त्री को अपने अधिकारों और इच्छाओं के प्रति सजग बनाता है। इस दृष्टि से उनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की एक सशक्त धारा का निर्माण करती हैं। मन्नू भंडारी की लेखनी आज की नारी के लिए प्रेरणा स्रोत है।

8. संदर्भ सूची (References)

- भंडारी, मन्नू. आपका बंटी, राजकमल प्रकाशन।
- भंडारी, मन्नू. महाभोज, राजकमल प्रकाशन।
- भंडारी, मन्नू. स्वामी, राजकमल प्रकाशन।
- भंडारी, मन्नू एवं यादव, राजेन्द्र. एक इंच मुस्कान, राजकमल प्रकाशन।
- मिश्र, प्रभाकर. हिंदी की नारीवादी लेखिकाएँ, साहित्य भंडार।
- चतुर्वेदी, हरिकृष्ण. हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना, प्रकाशन संस्थान।
- वर्मा, उषा. मन्नू भंडारी का कथा साहित्य और स्त्री विमर्श, नवीन पब्लिशर्स।
- दुबे, रेखा. समकालीन हिंदी साहित्य में नारी दृष्टिकोण, भारतीय प्रकाशन।
- शुक्ला, नेहा. स्त्री मन का साहित्यिक अनुशीलन, विद्याश्री प्रकाशन।